بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصار اللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974.E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-16.06.2023 محلہ احمدیہ قادیان۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बदर के युद्ध हेतु तय्यारी तथा रवानगी का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 16 जून 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشۡهَدُ أَنۡ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيۡكَ لَهٗ وَأَشۡهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُهٗ وَرَسُوۡلُهٗ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

मक्का के काफ़िरों की युद्ध की तय्यारी के कुछ वृत्तांत बयान हुए थे, इस बारे में और अधिक विवरण इस प्रकार है। उमय्या बिन ख़लफ़ तथा अबू लहब ने युद्ध में सम्मिलित होने से बचना चाहा। अतः अबू जहल, उमय्या बिन ख़लफ़ के पास आया और कहा-

तुम क़ुरैश के सरदारों में से हो, यदि तुम युद्ध में शामिल न हुए तो लोग भी पीछे हट जाएँगे इस लिए तुम हमारे साथ अवश्य चलो, चाहे एक दो दिन की यात्रा के बाद वापस आ जाना।

वास्तव में उमय्या युद्ध पर जाने से इस लिए भयभीत था क्यूँकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमय्या के विनाश की भविष्य वाणी कर रखी थी, इसका विस्तत वर्णन सही बुख़ारी में मिलता है।

अब् जहल ने अपने स्थान पर एक अन्य व्यक्ति को रवाना किया था। उसके न जाने का कारण आतका सुपुत्री अब्दुल मुत्तलिब का सपना था। अबू लहब कहा करता था कि आतका का सपना ऐसा है जैसे किसी व्यक्ति के हाथ में कोई चीज़ वास्तव म दे दी जाए।

मक्का के काफ़िरों की सेना अति जोश एवं उत्साह के साथ रवाना हुई। सेना की संख्या एक हज़ार थी, उनके पास एक सौ, अथवा कुछ कथनाकारों के अनुसार दो सौ घोड़े, सात सौ ऊँट, छः सौ युद्ध कवच तथा अन्य युद्ध सामग्री जैसे भाले, तलवारें और तीर कमानें बड़ी संख्या में थे।

क़ुरैश क़बीले के लोग मक्का से निकल कर जुहफ़ा में उतरे जो मदीने की दिशा में बयासी मील की दूरी पर है। यहाँ एक व्यक्ति जहीम बिन सलत ने लोगों से अपना एक सपना बयान किया जिसमें उसने यह दृश्य देखा था कि एक व्यक्ति घोड पर सवार होकर आया तथा उसके साथ एक ऊँट भी था और उसने कहा उतबा बिन रबीआ, शीबा बिन रबीआ, अबुल हकम बिन हश्शाम अर्थात अबू जहल, उमय्या बिन ख़लफ़ तथा अन्य अनेक क़ुरैश के सरदारों की हत्या हो गई है। फिर उसने अपने ऊँट की गर्दन में भाला मार कर उसे हमारे तम्भुओं की ओर छोड़ दिया। अतएव उस ऊँट का ख़ून हमारी सेना के हर एक तम्भू को लगा। यह सपना जब अबू जहल ने सुना तो वह उपहास एवं क्रोध से कहने लगा कि बनू अब्दुल मुत्तलिब में यह एक और नबी पैदा हो गया है। कल यदि हमने युद्ध किया तो ख़ूब पता चल जाएगा कि कौन मारा जाता है।

अबू सुफ़यान ने भी अबू जहल को यह सन्देश भिजवाया था कि युद्ध से बचने का प्रयत्न करो।

अबू सुफ़यान का यह सन्देश सुन कर अबू जहल ने कहा कि बख़ुदा, हम बदर तक अवश्य जाएँगे तथा वहाँ अपन ऊँट ज़िब्ह करेंगे, शराबें पियेंगे तथा हमारी सेविकाएँ हमारे सामने गीत गाएँगी। इस प्रकार पूर अरब देश में हमारी यात्रा एवं सेना की ख़बर पहुंच जाएगी तथा वे सदैव हमसे भयभीत रहेंगे।

अबू सुफ़यान के इस पैग़ाम पर बनू अदी तथा बनू ज़ोहरा क़बीले वापस चले गए तथा युद्ध में शामिल न हुए। अबू तालिब के बेटे तालिब भी काफ़िरों के साथ थे, रास्ते में काफ़िरों ने उन्हें कहा कि हम जानते हैं कि तुम हमारे साथ तो आ गए हो परन्तु तुम्हारी मूल सहानुभूतियाँ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ हैं। इस पर तालिब अपने कई साथियों के साथ वापस चले आए। तबरी इतिहासकार के एक हवाले में यह वर्णन भी है कि तालिब किसी दबाव के कारण मक्का के काफ़िरों के साथ निकले थे परन्तु उनका वर्णन मृतकों अथवा बन्दियों में नहीं मिलता, इसी प्रकार वे घर भी वापस न पहुंचे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम 12 रमज़ान, 2 हिजरी को मदीने से रवाना हुए। आपके साथ तीन सौ से कुछ ऊपर सहाबी थे। अधिकांश रिवायतों में मुसलमानों की संख्या तीन सौ तेरह बयान हुई है। इनमें 74 महाजिर तथा शेष अन्सार थे। यह पहला युद्ध था जिसमें अन्सार भी शामिल हुए। हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ी. को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने में रुकने का आदेश दिया क्यूँकि उनकी पतनी हज़रत रुक़य्या सुपुत्री रसूलुल्लाह बीमार थीं।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम युद्ध के लिए रवाना होने लगे तो एक महिला उम्मे वरक़ा सुपुत्री नौफ़िल ने निवेदन किया कि मुझे भी जिहाद पर जाने की अनुमति दें, मैं आपके साथ बीमारों की सेवा करूँगी, सम्भवतः अल्लाह तआला मुझे भी शहादत अता फ़रमाए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम अपने घर पर रहो, अल्लाह तआला तुम्हें शहादत प्रदान करेगा।

अतएव हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के दौर में उम्मे वरक़ा की उनके ग़ुलाम तथा सेविका ने हत्या कर दी और यूँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशगोई के अनुसार उन्हें शहादत मिली।

इस युद्ध में मुसलमानों के पास पाँच, कुछ रिवायतों के अनुसार दो घोड़े थे, साठ युद्ध कवच थे, सत्तर अथवा अस्सी ऊँट थे। सहाबा किराम के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह दुआ की, ऐ अल्लाह! ये नंगे पाँव हैं इन्हें सवारियाँ अता फ़रमा, ये नंगे बदन हैं इन्हें लिबास अता फ़रमा, ये भूखे हैं इनके पेट भर दे, ये निर्धन हैं इन्हें अपनी कृपा से समृद्ध कर दे। अतएव यह दुआ क़बूल हुई तथा युद्ध की समाप्ति पर कोई भी ऐसा न था कि जिसके पास सवारी न हो। यात्रा की सामग्री इतनी थी कि खाने पीने की कोई तंगी न रही, वस्त्र हीन लोगों को वस्त्र मिल गए, युद्ध में हाथ आए बन्दियों को स्वतंत्र कराने के बदले में इतनो धन सम्पत्ति मिली कि हर एक परिवार धनवान हो गया।

हज़रत उसमान रज़ी. के अतिरिक्त भी कुछ निष्ठावान ऐसे थे जिन्हें हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने युद्ध पर जाने की अनुमति नहीं दी। उनमें हज़रत अबू उमामा बिन सअलबा की माता जी बीमार थीं, हज़रत सअद बिन अबादा जो दूसरों को युद्ध की तय्यारी करा रहे थे, उन्हें साँप ने डस लिया और वे युद्ध पर न जा सके। इसी प्रकार आप स. ने रास्ते से ही कम आयु के मुजाहिदों को वापसी का आदेश दिया। इनमें उमैर बिन अबी वक़ास भी शामिल थे, वे वापसी का आदेश सुन कर रोने लगे। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें अनुमति प्रदान कर दी अतएव वे युद्ध में शामिल हुए तथा शहादत का प्याला पो लिया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं-

आज वह ज़माना आया है कि लोग इस्लाम तथा ईमान के लिए क़ुर्बानी से बचने के लिए टालमटाल और बहाने तलाश करते हैं तथा समय आने पर कहते हैं कि हमें यह कठिनाई है और वह रोक है।

परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र शक्ति के आधीन मुसलमानों में क़ुर्बानी की वह भावना पैदा हो चुकी थी कि पुरुष तथा व्यस्क महिलाएँ तो अलग रहीं बच्चे भी इस भावना से ओत प्रोत दिखाई देते थे।

इस यात्रा में आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने पीछे अब्दुल्लाह इब्ने मकतूम को मदीने का अमीर नियुक्त फ़रमाया किन्तु रास्ते में इस विचार से कि अब्दुल्लाह एक नेत्रहीन व्यक्ति हैं तथा मदीने की व्यवस्था सुदृढ़ रहनी चाहिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू लुबाबा बिन मुंज़िर को मदीने का अमीर नियुक्त करके वापस भिजवा दिया। इस प्रकार क़ुबा के लिए आसिम बिन अदी को अमीर नियुक्त फ़रमाया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लामी सेना का झंडा मसअब बिन उमैर रज़ीयल्लाहु अन्हु को दिया। यह झंडा सफ़ेद रंग का था। इसके अतिरिक्त दो काले झंडे भी थे जिनमें से एक हज़रत अली रज़ीयल्लाहु अन्हु के पास था। यह झंडा हज़रत आयशा रज़ी. को चुनरी से बनाया गया था जबकि दूसरा काला झंडा एक अन्सारी सहाबी के पास था। एक रिवायत के अनुसार इस्लामी सेना के पास तीन झंडे थे। महाजिरों का झंडा हज़रत मुसअब बिन उमैर के पास, क़बीला ख़िज़रज का झंडा हज़रत हबाब बिन मुंज़िर के पास जबकि औस क़बीले का झंडा हज़रत सअद बिन मुआज़ के पास था।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने शेष वर्णन आगे बयान होने का इरशाद फ़रमाने के बाद निम्नलिखित मृतकों का सद्वर्णन तथा जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई-

मुकर्रम शेख़ ग़ुलाम रहमानी साहब ऑफ़ यू.के.। मुकर्रम ताहिर ए जी हामा साहब ऑफ़ मेहदीआबाद, डोरी, बर्कीनाफ़ासो, मुकर्रम ख़्वाजा दाऊद अहमद साहब। मुकर्रम सय्यद तनवीर शाह साहब ऑफ़ सिसकाटोन, कैनेडा। मुकर्रम राणा मुहम्मद मुज़फ़्फ़रुल्लाह ख़ान साहब मुरब्बी सिलसिला। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मृतकों की मग़फ़िरत तथा दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ
سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا
شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ۔ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ
ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ
وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131